Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 938–943

STUDY OF THE PREVALENCE OF SAGUN BHAKTI IN BHAKTIKAL LITERATURE

भक्तिकालीन साहित्य में सगुण भक्ति की व्यापकता का अनुशीलन

Kamlesh Kumar [1], Shrikant Mishra [2]

[1] Research Scholar, Hindi, Malvanchal University, M.P., India
[2] Hindi Department, S.S. College Shahjahanpur, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.2525

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Sagun Bhakti is a process of seeing God everywhere. When the devotee starts seeing his deity in every particle, then his sadhana is successful. Those who speed up their sadhana with the basic mantra of 'Hari Vyapak Sarvatra Samana' are Sagun worshippers. Sagun worshipers believe that whoever is endowed with qualities is Sagun and Nirgun in which qualities cannot be imposed. All the poets of Bhaktikal, no matter which poetic stream they represent, can definitely see some form of Sagun Bhakti in all of them. Every poet of Ram poetry stream does Sagun Bhakti of Purna Brahma Ram. Their entire literature is soaked in the worship of Ram. In the Krishna Bhakti stream, the tradition of worshiping Krishna in the form of Brahma is widespread. In Nirguna branch, many qualities of Saguna devotion like love and remembrance are found in Gyanashrayi and Premashrayi poetry streams also. Whose pursuit is the theme of the presented research paper.

Hindi: सगुण भक्ति परमात्मा को सर्वत्र देखने की एक प्रक्रिया है। जब साधक अपने ईष्ट को कण-कण में देखने लगता है, तब उसकी साधना सफल होती है। 'हरि व्यापक सर्वत्र समाना' का मूल मंत्र लेकर जो जन अपनी साधना को गति देते हैं वे सगुण उपासक ही हैं। सगुण उपासक साधक गणों का मानना है कि जो भी गुणों से युक्त है वह सगुण है और निर्गुण जिसमें गुणों का आरोप नहीं किया जा सकता। भक्तिकाल के सभी कवि चाहे वह किसी काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करते हों उन सभी में सगुण भक्ति का कोई न कोई स्वरूप अवश्य देखने को मिल जाता है। राम काव्यधारा के प्रत्येक कवि पूर्ण ब्रह्म राम की सगुण भक्ति करता है। इनका सम्पूर्ण साहित्य राम की उपासना से सिक्त है। कृष्ण भक्ति धारा में कृष्ण को ब्रह्म रूप में उपासन की परम्परा विस्तृत है। निर्गुण शाखा में ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी काव्यधाराओं में भी प्रेम, स्मरण जैसे सगुण भक्ति के अनेक गुण मिल जाते हैं। जिनका अनुशीलन प्रस्तुत शोध पत्र का पाथेय है।

Keywords: Bhakti Movement, Bhakti Period Literature, Sagun Bhakti, Comprehensiveness, भक्ति आंदोलन, भक्तिकालीन साहित्य, सगुण भक्ति, व्यापकता

1. सगुण भक्ति का परिचय

सगुण भक्ति से तात्पर्य उन भक्तों से है जो अपने इष्ट की आराधना में नाम रूप का महत्व स्वीकार करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यह सगुण भक्ति के माध्यम से उपासना करने वाले भक्तों के लिए अपने प्रेमी परमात्मा का नाम रूप ही एक मात्र सहारा होता है। वे इसे ही अपना सर्वस्व मानते हैं। सगुण भक्ति करने वाले भक्तों में नामदेव का नाम लिया जाना चाहिए। कहा जाता है कि नामदेव बिठोवा के परम भक्त थे। गुरू ने इन्हें योग शिक्षा देने का प्रयत्न किया लेकिन इनका मन बिठोेवा के सगुण स्वरूप में ही लग गया। भक्ति मार्ग में वर्णन आया है कि बिठोवा की मूर्ति इनके हाथ से दूध पिया करती थी। एक बार तो शिव मंदिर के द्वार की दिशा ही बदल गयी। ऐसी सगुण भक्ति करने वाले अनेक भक्तांे का भारतीय साहित्य में वर्णन मिलता है।

रामचरित मानस में सगुण भक्ति आराधन करने वाले सुतीक्षण के हृदय में भगवान का स्वरूप प्रकट होता है जिसका दर्शन वे सदैव करते हैं। ¬प्रसंग दृष्टव्य है-

हे बिधि दीनबंधु रघुराया। मो से सठ पर करिहहिं दाया।।
सहित अनुज मोहि राम गोसाईं। मिलिहहिं निज सेवक की नाईं।।

मोरे जियँ भरोस दृढ़ नाहीं। भगति बिरति न ग्यान मन माहीं।।

नहिं सतसंग जोग जप जागा। नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा।।

एक बानि करुनानिधान की। सो प्रिय जाकें गति न आन की।।

होइहैं सुफल आजु मम लोचन। देखि बदन पंकज भव मोचन।।

राम के दर्शन कर सुतीक्ष्ण अपने सुध-बुध खो बैठे और अचेत हो गए। श्रीराम ने उनको चैतन्य किया, तो वे रोने लगे और बोले कि आप मनुष्य रूप में साक्षात ब्रह्म हैं, आप खुद मेरे पास चलकर आए हैं। श्रीराम ने कहा कि हे मुनि, इस संसार में कोई बड़ा छोटा नहीं होता है। मैं तो केवल भक्ति के बस में रहता हूं। ईश्वर को सगुण रूप में मानने वाले भक्त ईश्वर का स्वरूप सर्वत्र देखते हैं। जिस कारण उनका व्यवहार भी सभी के प्रति ईष्ट के मानिन्द होता है। भक्ति के शिखर पुरोधा काकभुशुण्डि की सगुण भक्ति निष्ठा दृष्टव्य है-

तुरत भयउँ मैं काग तब पुनि मुनि पद सिरु नाइ।

सुमिरि राम रघुबंस मनि हरषित चलेउँ उड़ाइ।।

उमा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध।

निज प्रभुमय देखहिं जगत् केहि सन करहिं बिरोध।।

सुनु खगेस नहिं कछु रिषि दूषन। उर प्रेरक रघुबंस बिभूषन।।

कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी। लीन्ही प्रेम परिच्छा मोरी।।

मन बच क्रम मोहि निज जन जाना। मुनि मति पुनि फेरी भगवाना।।

रिषि मम महत सीलता देखी। राम चरन बिस्वास बिसेषी।।

अति बिसमय पुनि पुनि पछिताई। सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई।।

मम परितोष बिबिधि बिधि कीन्हा। हरषित राममंत्र तब दीन्हा।।

बालकरूप राम कर ध्याना। कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना।।

सुंदर सुखद मोहि अति भावा। सो प्रथमहिं मैं तुम्हहि सुनाव।

कागभुशुण्डि द्वारा सगुण भक्ति का पक्ष करने पर मुनि द्वारा श्राप मिलता है और उसे प्राप्त कर दुखी नहीं होते हैं बल्कि उन्हें हर्ष की अनुभूति होती है। ईश्वर को सर्वस्व निछावर कर चुका भक्ति हर परिस्थिति में प्रसन्न रहता है। ऐसे भक्त के लिए भगवान उससे कभी दूर नहीं होते वे तो सदैव पुत्र की भांति अपने भक्त की देखरेख करते हैं।

श्रीमद्भवगत् गीता में श्रीकृष्ण सगुण भक्ति का महत्व बताते हुए कहते हैं-

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।

तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मन ।।

यदि कोई मुझे श्रद्धा भक्ति के साथ पत्र, पुष्प, फल या जल अर्पित करता है, मैं शुद्ध चेतना युक्त मेरे भक्त द्वारा प्रेम पूर्वक अर्पित किए पदार्थ को सहर्ष स्वीकार करता हूँ।

सगुण भक्ति इष्ट के प्रत्यक्ष दर्शन और व्यवहार का दूसरा नाम है। रूप और नाम में निष्ठा रखने वाले भक्त सदा अपने इष्ट से प्रेम करते हैं। अपनी भक्ति के अनुरूप अनुराग, खीज, दैन्य एवं यहाँ तक क्रोध भी प्रकट करता है। सगुण भक्त के लिए भगवान इसी दुनिया की वस्तु है। उसे ढूंढने कहीं बाहर नहीं जाना है। यह भक्त को उठते, बैठते, चलते-फिरते, खाते-पीते, रोते-गाते, सभी समय अपने प्रभू को अपने पास ही पाता है। यही सगुण भक्ति का सौन्दर्य है।

भक्तिकालीन काव्य में सगुण भक्ति की व्यापकताः-

सम्पूर्ण मध्यकाल में भक्तिकाल की परम्परा का निर्वहन देखने को मिल जाता है। उक्त अध्याय में भक्तिकालीन काव्य में सगुण भक्ति की व्यापकता का अध्ययन करने का विनम्र प्रयास करेंगे। इसमें सगुण भक्ति देखना तो ऐसे ही जैसे जल के सागर में जल बिन्दु की खोज करना। फिर भी शोध की मर्यादा का अनुसरण करते हुए सर्वप्रथम रामभक्ति धारा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास के साहित्य में सगुण भक्ति की अभिव्यक्ति देखें-

प्रीति राम सों नीति पथ चलिय राग रिस जीति । तुलसी संतन के मते इहै भगति की रीति।।

एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास । एक राम घन स्याम हित चातक तुलसीदास।।

चातक तुलसी के मतें स्वातिहुँ पिऐ न पानि । प्रेम तृषा बाढ़ति भली घटें घटैगी आनि।।

चढ़त न चातक चित कबहुँ प्रिय पयोद के दोष । तुलसी प्रेम पयोधि की ताते नाप न जोख।।

तीनि लोक तिहुँ काल जस चातक ही कें माथ। तुलसी जासु न दीनता सुनी दूसरे नाथ।।

बास बेस बोलनि चलनि मानस मंजु मराल । तुलसी चातक प्रेम की कीरति बिसद बिसाल।।

गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस में लिखते हैं-

रामहि केवल प्रेमु पिआरा। जानिए लेउ जो जाननिहारा, देवता लोग पीड़ित और भयभीत होकर जब परमात्मा श्री राम को खोजने निकलते हैं तो भगवान शिव उन्हें राम का पता बताते हुए कहते हैं-

बैठे सुर सब करहिं बिचारा। कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा।।

पुर बैकुंठ जान कह कोई । कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई।।

तेहिं समाज गिरिजा मैं रहेऊँ । अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ।।

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना । प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।।

विनय पत्रिका में गोस्वामी तुलसीदास भक्ति भाव से आराध्य श्री राम को संबोधित करते हुए कहते हैं-

जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे ।

काको नाम पतित-पावन जग, केहि अति दीन पियारे।।

कौने देव बराइ बिरद-हित, हठि हठि अधम उधारे। खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप जड़, जवन कवन सुर तारे।।

देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब, माया-बिबस बिचारे।

तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे।।

तुलसीदास जी का संदेश है की जिन्हें राम प्रिय नहीं है उनका हमें छोड़ देना चाहिए। कहा जाता है कि मीराबाई को एक पत्र के उत्तर में तुलसीदास जी ने यह पत्र लिखा था-

जाके प्रिय न राम-बैदेही।

तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही।।

तज्यो पिता प्रहलाद, बिभीषन बंधु, भरत महतारी।

बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज-बनितन्हि, भये मुद-मंगलकारी।।

नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेब्य जहाँ लौं।

अंजन कहा आँखि जेहि फूटै, बहुतक कहाँ कहाँ लौं।।

तुलसी सो सब भाँति परम हित पूज्य प्रानते प्यारो।

जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो।।

कृष्ण भक्ति के पुरोधा सूरदास जी के सगुण भक्तिसागर से कुछ अमृत सीकर प्रस्तुत है-

काकैं द्वार जाइ सिर नाऊँ, पर हाथ कहाँ बिकाउँ।।

ऐसौ को दाता है समरथ, जाके दिऐं अघाउँ ।।

अन्त काल तुम्हरें सुमिरन गति, अनत कहूँ नहिं दाउँ।।

रंक सुदामा कियौ अजाची, दियौ अभय पद ठाउँ।।

कामधेनु, चिंतामनि दीन्हौं, कल्पवृच्छ-तर छाउँ।।

भव-समुद्र अति देखि भयानक, मन मैं अधिक डराउँ ।।

कीजै कृपा सुमिरि अपनौ प्रन, सूरदास बलि जाउँ ।।

इसी तरह सब कुछ त्याग कर केवल भगवान का स्मरण करने का संदेश सूरदास जी कितने सरल शब्दों में देते हैं-

रे मन, गोबिंद के है रहियै ।

इहिं संसार अपार बिरत है, जम की त्रास न सहियै।।

दुख, सुख, कीरति, भाग आपनें आइ परै सो गहिये।।

सूरदास भगवंत-भजन करि अंत बार कछु लहियै ।।

सूरदास जी अपने भक्ति पदों में कृष्ण की बाल छवि गोपियों का सरल प्रेम माता यशोदा का वात्सल्य इत्यादि वर्णन करते हैं पर्यावरण में इतना सहज और स्वाभाविक है कि कोई भी उससे प्रभावित हुए बिना रह नहीं सकता।

निर्गुण की ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि कबीरदास के साहित्य में सगुण भक्ति के स्फुट मोतियों का विवरण प्रस्तुत है-

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।

ढाई अक्षर प्रेमका पढ़े सो पंडित होइ।।

कबीर तो ढाई अक्षर के प्रेम को ही ज्ञानकी पराकाष्ठा मानते हैं। उनकी दृष्टि में प्रेम के बिना शास्त्र का कोरा ज्ञान बोझ ढोने के समान है। भजन का मनुष्य के जीवन में बहुत बडा महत्व है। इसी और इंगित करते हुए कबीर दास जी लिखते हैं-

भजौ रे भैया राम गोबिंद हरी।

जप तप साधन नहिं कछु लागत, खरचत नहिं गठरी।।

संतत संपत सुखके कारन जासों भूल परी।।

कहत कबीरा राम न जा मुख ता मुख धूल भरी।।

कवि निर्गुण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि लेकिन स्मरण को भक्ति का विशेषण मानते हैं जितना महत्व स्मरण को देते हैं उसे कहीं अधिक महत्व प्रेम को प्रदान करते हैं। कबीर दास जी का मत है कि आप सच्चे मन से उस परमात्मा को याद करेंगे तो वह निश्चय ही आपको प्रत्यक्ष होगा।

निर्गुण की प्रेमाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि जायसी के अनुसार प्रेम की एक चिनगारी मात्र हृदय में अमित ज्वाला प्रज्वलित करने में सक्षम होती है, जिसमें सम्पूर्ण लोक विचलित हो उठता है-

मुहमद चिनगी अनँग की सुनि महि गँगन डेराइ।

धनि बिरही औ धनि हिया जेहि सब आगि समाइ।।

इतना ही नहीं, जब हृदय में प्रेम जाग्रत् होता है तो प्रेमी की दशा मृत्यु से भी अधिक भयानक हो जाती है। प्रेम का पन्थ कण्टकाकीर्ण है अर्थात् प्रेमोपलब्धि अत्यन्त दुर्लभ है। वास्तव में प्रेमी को प्रेमास्पद से मिलने की अदम्य इच्छाशक्ति प्रेम-पथिक बनने के लिये विवश कर देती है। प्रेमी प्रेम-पथ पर चलने के लिये समय की परवाह नहीं करता। उसके शरीर की स्थिति अद्भुत हो जाती है। उसकी आँखों में प्रेमाश्रु मात्र का ही सम्बल होता है-

पेम पंथ दिन घरी न देखा। तब देखै जब होइ सरेखा।।

जेहि तन पेम कहाँ तेहि माँसू। कया न रकत न नयनन्हि आँसू।।

प्रेमी का लक्ष्य प्रेमोपलब्धि ही होता है। उसे पाकर वह पुनः इस नश्वर संसार में नहीं आना चाहता-

पेम पंथ जौं पहुँचै पाएँ। बहुरि न आइ मिलै एहि छाएँ।

भलेहिं पेम है कठिन दुहेला। दुइ जग तरा पेम जेइँ खेला।

दिव्य प्रेमोपलब्धि के उपरान्त प्रेमी कामना रहित हो जाता है अर्थात् निष्काम हो जाता है। ऐसे ही निष्काम प्रेम का अनुभव कराते हुए जायसी ने कहा है-

न हौं सरग क चाहीं राजू। ना मोहि नरक सेंति किछु काजू।।

चाहौं ओहि कर दरसन पावा। जेइ मोहि आनि पेम पथ लावा।।

ऐसी स्थिति में प्रेमी को तीनों लोक चैदहों भुवन में प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी लावण्यमय नहीं दिखता -

तीन लोक चैदह खण्ड सबै परै मोंहि सूझि ।

पेम छाड़ि किछु और न लोना जौं देखौं मन बूझि।।

इस प्रकार यह प्रेमतत्त्व आकाश में अवस्थित ध्रुव तारे से भी उत्तुङ्ग ही है। जिसने प्रेम-मार्ग पर चलकर अपना सिर उतारकर जमीन पर नहीं रखा, (अहं का त्याग) उसका पृथ्वी पर आना ही व्यर्थ हो गया। प्रेम के बल पर ही मनुष्य वैकुण्ठ का जीव बन पाता है, अन्यथा उसकी स्थिति एक मुट्ठी धूल के सदृश है-

मानुस पेम भएउ बैकुंठी। नाहिं त काह छार एक मूँठी।

हिंदी साहित्य की धाराओं के प्रतिनिधि कवियों के साहित्य में भक्ति के दर्शन हुए, अब अन्य प्रमुख प्रसिद्ध कवियों के साहित्य में सगुण भक्ति स्वरूप को देखने का विनम्र प्रयास करेंगे-

गिरिधर की दीवानी मीरा तो बाल्यावस्था से ही कृष्ण की प्रेमाभक्ति में इतनी लवलीन हो गयी थीं कि उनको रात- दिन कृष्ण के अलावा कुछ भाया ही नहीं। उनके गाये मधुर स्वरों के पदों में भगवत् प्रेम प्रवाहित होता रहता है। जो सुनने या गाने वालों को भक्ति-भाव से भर देता है। कहते हैं, मीरा नाचती-गाती द्वारकाधीश के विग्रह में समा गयीं, केवल उनकी चुनरी का छोर ही लोगों को दिखायी दिया जो कि एक अलौकिक घटना थी। कितनी उत्तम गति मीरा ने पायी, जो उच्च कोटि के ही भक्तों को प्राप्त होती है। उनके रचे प्रत्येक पद किसी को प्रभु-भक्ति-रस में सम्प्रवाहित करने में सक्षम हैं। मीराजी अपनी उपलब्धि बताते हुए कहती हैं-

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो।
बस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा को अपणायो ।
जनम जनमकी पूँजी पाई, जगमें सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोड़ चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो ।
सतकी नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीराँके प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो ।

कृष्ण भक्ति के रस में सर्वांग डूबे रसखान तो प्रेमा भक्ति की साक्षात प्रतिमा ही है-

प्रान वही जु रहैं रिझि वा पर, रूप वही जिहिं वाहि रिझायौ।
सीस वही जिन वे परसे पद अंग वही जिन वा परसायौ ।।
दूध वही जु दुहायो वही सों, दही सु सही जु बही ढुरकायौ।
और कहा लौं कहौं रसखान री भाव वही जु वही मन भायौ।।
सेस, महेस, गनेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरन्तर गावैं।
जाहि अनादि, अनन्त, अखण्ड, अछेद, अभेद सुबेद बतावैं।।
नारद-से सुक ब्यास रटैं, पचिहारे, तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीरकी छोहरियाँ, छछियाभरि छाछ पै नाच नचावैं ।।

इसी प्रकार भारत के महान संत गुरु नानक की वाणी में भक्ति का महत्व देखिए-

हरि बिनु तेरो को न सहाई ।
काकी मात-पिता सुत बनिता, को काहू को भाई।।
धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिओ अपनाई।
तन छूटै कुछ संग न चालै, कहा ताहि लपटाई।।
दीन दयाल सदा दुःख-भंजन, ता सिउ रुचि न बढ़ाई।
नानक कहत जगत सभ मिथिआ, ज्यों सुपना रैनाई ।।

इसी प्रकार संत पलटू साहब का पद देखें -

साहब के दरबार में, केवल भक्ति पियार।
केवल भक्ति पियार साहब भक्ति में राजी।
तजा सकल पकवान, लिया दासी सुत भाजी।
जप तप नेम अचार करे बहुतेरा कोई।
खाये सिवरी के बेर, मरा सब ऋषि मुनि रोई।
राजा युधिष्ठिर यज्ञ बटोरा, जोरा सकल समाजा ।
मरदा सबका मान सपुच बिन घंट न बाजा।
पलटू ऊँची जात का मत कोई करे अहंकार ।
साहब के दरबार में, केवल भक्ति पियार।।

राजस्थान के प्रसिद्ध संत दादू बाहरी आडंबर का विरोध करते हैं लेकिन प्रेम भक्ति एवं सतसंग के बड़े प्रशंसक है वे एक पद में लिखते हैं-

दादू दुनिया दीवानी, पूजे पाहन पानी।
गढ़ मूरत मंदिर में थापी, निव निव करत सलामी।

चन्दन फूल अछत सिव ऊपर बकरा भेट भवानी।

छप्पन भोग लगे ठाकुर को पावत चेत न प्रानी।

धाय-धाय तीरथ को ध्यावे, साध संग नहिं मानी।

ताते पड़े करम बस फन्दे भरमें चारों खानी।

बिन सत्संग सार नहिं पावै फिर-फिर भरम भुलानी।

भक्तिकाल के ऐसे ही न जाने कितने संत हैं जो सगुण भक्ति के किसी ने किसी अंग से प्रभावित है साथ ही आडंबर रहित भक्ति के पक्षधर हैं। विद्वानों का मत है कि भक्ति दुख और द्वंद्व में फंसे व्यक्ति का एकमात्र आत्म बल है, भक्ति तपस्वी जीवन यापन की परंपरा है। भक्ति उस शक्तिमान का साकार आह्वान है। भावना में ईश्वर को उतारने का उत्तम दर्पण है भक्ति। अधिक क्या कहा जाए भक्ति की सार्थकता जीवन के सभी पक्षों में आवश्यक है। जीवन के कठिन श्रमसाध्य मार्ग पर चलने वाले भक्त को हताश और निराश नहीं देखा जाता जबकि भौतिकवादी प्रायः मानसिक रूप से पीड़ित पाए जाते हैं सर्वशक्तिमान सत्ता का आश्रय जहां मानव मन को संबल प्रदान करता है वही विपरीत परिस्थितियों में जीवन को बनाए रखने का बल भी प्रदान करता है। इसी कारण भक्तिकालीन काव्य में प्रत्येक काव्य धाराओं में प्रेम, करूण, दया, स्मरण, इत्यादि को महत्व प्रदान किया गया है, इसी विशेषता को सगुण भक्ति के परिप्रेक्ष्य में देखने का विनम्र प्रयास प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Tulsidas, Shri Ramcharit Manas, Aranya Kand, 2. 10
Ibid, Uttarkand, 2. 112
Shrimad Bhagwat Geeta-10.81.4
Tulsidas, Dohavali, 68, 277, 79, 81, 88, 97
Tulsidas, Shri Ramcharitmanas, Balkand, 185/1-5
Tulsidas, Vinayapatrika, verse 101 ibid, 174.
Surdas, Sur-Vinay-Patrika, verse 233,
same, 71
Kabirdas, Bhajan-collection, verse 209
Bhagwat Prem Issue, page 425
Kabirdas, Bhajan-collection, verse 574
Meerabai, Bhajan-collection, verse 738